"मैं" और शख्सियत

-ब्र.कु.प्रीति

अहसान को मानें, लेकिन दूसरे से अहसानमंद होने की उम्मीद न करें

अहसान एक खूबसूरत शब्द है। अहसान एक अहसास है। यह हमारी शख्सियत को सुधारता है और चरित्र बनाता है। अहसानमंद होने का अहसास विनम्रता से पैदा होता है। ये दूसरों के प्रति शुक्रगुज़ार होने को एक भाव भी है। यह भाव दूसरों के प्रति अपनाए गए हमारे नज़रिए से पता चलता है और हमारे व्यवहार में झलकता है। अहसान का मतलब किसी अच्छाई का बदला चुकाना नहीं है, क्योंकि अहसान सिर्फ एक लेन-देन नहीं है। दया, आपसी समझदारी और धैर्य की कीमत नहीं चुकाई जा सकती। अहसानमंद होने का अहसास हमें आपसी सहयोग और एक-दूसरे के प्रति समझ की कला सिखाता है। अहसानमंद होने के अहसास में ईमानदारी होनी चाहिए। सीधे-सीधे शब्दों में धन्यवाद कहकर भी इस भावना को दर्शाया जा सकता है। अकसर हम लोग अपने बहुत नज़दीकी लोगों जैसे जीवनसाथी, संबंधी, दोस्त का शुक्रगुज़ार होना भूल जाते हैं। एक सच्चे और ईमानदार इंसान का चरित्र और शख्सियत बनाने वाले गुणों में अहसानमंद होने के अहसास का सबसे ऊँचा दर्जा है।

सोचिए, ज़िंदगी में हमारे लिए सबसे कीमती चीज़ क्या है? अकसर उपहार देने वाले की कीमत उपहार से कहीं ज़्यादा होती है लेकिन जो चीज़ें हमारे पास पहले से मौजूद होती हैं यदि कोई उन्हीं चीज़ों को उपहार के तौर पर देता है तो हम अकसर अहसान की भावना व्यक्त नहीं करते हैं।

मुड़कर देखिए और उन लोगों को याद करने की कोशिश कीजिए जिनका हमारे जीवन पर अच्छा असर पड़ा हो। ऐसे लोगों में हमारे माँ-बाप, शिक्षक या कोई भी दूसरा व्यक्ति हो सकता है जिसने हमारी सहायता करने के लिए भरपूर समय दिया हो। शायद देखने में ऐसा लगे कि उन्होंने अपना कर्तव्य निभाया है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। उन्होंने हमारे लिए अपनी इच्छा से अपने समय, मेहनत, पैसे और कई चीज़ों का त्याग किया है। उन्होंने हमारे प्रति प्रेम के कारण ऐसा किया न कि धन्यवाद पाने के लिए। किसी मोड़ पर, व्यक्ति इस बात को महसूस करता है कि उसकी ज़िंदगी को संवारने की कितनी मेहनत की गई है। शायद उन्हें धन्यवाद देने के लिए अब भी देर नहीं हुई है।

जीज़स की कहानी

जीज़स के बारे में एक कहानी है कि उन्होंने एक बार सौ कोढ़ियों का कोढ़ ठीक कर दिया और जब वे मुड़े तो एक को छोड़कर सब जा चुके थे। उसमें जीज़स को धन्यवाद देने की विनम्रता थी। तब जीज़स बोले, "मैंने तो कुछ भी नहीं किया।" इस कहानी से क्या सबक मिलता है?

- ज़्यादातर लोग अहसान-फरामोश होते हैं।
- अहसान मानने वाला इंसान मुश्किल से मिलता है।
- जीज़स की तरह हमें भी किसीसे अहसान मानने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

संयोग से

अगर ज़िंदगी में हम किसीके लिए कोई भी काम करते हैं तो यह संयोग से नहीं होता, बल्कि हमेशा खास तौर पर होता है। एक अच्छे इंसान के नज़रिये से देखा जाए तो वह कोई काम अहसान करने के लिए नहीं करता। अगर दूसरों की मदद करना संभव हो और वह फिर भी न की जाए तो यह बहुत दुःख की बात है, लेकिन इस बात का पक्का यकीन है कि संयोग से कुछ भी घटित नहीं होता।

मुड़कर देखिए और उन लोगों को याद करने की कोशिश कीजिए जिनका हमारे जीवन पर अच्छा असर पड़ा हो। ऐसे लोगों में हमारे माँ-बाप, शिक्षक या कोई भी दूसरा व्यक्ति हो सकता है जिसने हमारी सहायता करने के लिए भरपूर समय दिया हो। शायद देखने में ऐसा लगे कि उन्होंने अपना कर्तव्य निभाया है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। उन्होंने हमारे लिए अपनी इच्छा से अपने समय, मेहनत, पैसे और कई चीज़ों का त्याग किया है।

भरोसेमंद और वफादार बनें

पुरानी कहावत है, "एक छटाक वफादारी एक सेर चालाकी से ज़्यादा अच्छी है।" यह सर्वव्यापी और अटल नियम है।

काबिलीयत बहुत ज़रूरी है, लेकिन भरोसेमंद होना अनिवार्य है। अगर हमारे साथ कोई ऐसा व्यक्ति है जिसमें सारी खूबियां हैं लेकिन वह भरोसेमंद नहीं है तो क्या हम ऐसे व्यक्ति को अपनी टीम में रखना पसंद करेंगे? नहीं।

मुझे यकीन था कि तुम ज़रूर आओगे

बचपन में दो ऐसे दोस्त थे जो स्कूल, कॉलेज और यहाँ तक कि फौज में भी साथ ही भरती हुए। युद्ध छिड़ गया और दोनो एक ही यूनिट में थे। एक रात उनपर हमला हुआ और चारों तरफ से उन पर गोलियां बरस रही थीं। ऐसे में अंधेरे से एक आवाज़ आई, "हैरी, इधर आओ, मेरी मदद करो।" हैरी ने अपने बचपन के दोस्त बिल की आवाज़ फौरन पहचान ली। उसने अपने कैप्टन से पूछा कि क्या वो जा सकता है लेकिन कैप्टन ने कहा, "मेरे पास पहले से ही आदमी कम हैं। मैं अपना एक और आदमी नहीं खोना चाहता।" हैरी चुप रहा। फिर उसके दोस्त की आवाज़ आई पर हैरी चुप बैठा रहा। हैरी अपने को रोक न सका और कैप्टन से बोला कि उसके दोस्त की मदद के लिए उसे जाना ही होगा। कैप्टन ने बेमन से उसे इजाज़त दी। हैरी अंधेरे में रेंगता हुआ आगे बढ़ा और बिल को अपने खड्डे में ले आया। उन लोगों ने पाया कि बिल तो मर चुका था। अब कैप्टन नाराज़ हो गया और हैरी पर चिल्लाया, "मैंने कहा था न कि वह बचेगा नहीं और तुम भी मर जाते तो मैं अपना एक और आदमी खो देता। तुमने वहां जाकर गलती की।" हैरी ने शांत स्वभाव से जवाब दिया, "मैंने जो किया वो ठीक था। जब मैं बिल के पास पहुँचा तो वह ज़िंदा था और उसके आखिरी शब्द थे 'हैरी मुझे यकीन था कि तुम ज़रूर आओगे'।" अच्छे रिश्ते बड़ी मुश्किल से बनते हैं और एक बार बन जाएं तो उन्हें निभाना चाहिए। हमसे अकसर कहा जाता है, अपने सपनों को साकार करो। मगर हम अपने सपनों को दूसरों की कीमत पर असलियत का रूप नहीं दे सकते। ऐसा करने वालों के पास चरित्र नहीं होता। हमें अपने परिवार, दोस्तों और उन लोगों के लिए जिनकी हम परवाह करते हैं और जो हम पर निर्भर हैं, अपने निजी हितों का त्याग करना चाहिए।

मन में मैल न रखें

कूड़ा इकट्ठा करने वाला न बनें। क्या हमने वह कहावत सुनी है, "माफ तो मैं कर सकता हूँ लेकिन भूल नहीं सकता।"

जब एक व्यक्ति माफ करने से इंकार कर देता है तो वह उन सभी दरवाज़ों को बंद कर देता है जिन्हें उसे खोलने की कभी ज़रूरत पड़ सकती है। जब हम मन में वैर और द्वेष का भाव रखते हैं तो सबसे ज़्यादा नुकसान किसको पहुँचाते हैं? खुद अपने को।

कहानी

जिम और जेरी बचपन के दोस्त थे मगर किसी कारण उनकी दोस्ती में दरार पड़ गई। वे 25 साल तक एक-दूसरे से नहीं बोले। जेरी मृत्युशैय्या पर पड़ा था और दिल पर बोझ लेकर मरना नहीं चाहता था। इसलिए उसने जिम को बुलवाया और माफी मांगते हुए कहा, "हम एक-दूसरे को क्षमा कर दें और पिछली बातों को भूल जाएं।" जिम को भी यह बात अच्छी लगी। उसने जेरी से अस्पताल जाकर भेंट करने का फैसला किया।

उन्होंने बीते पिछले 25 वर्षों को याद किया, अपने मतभेदों को भुलाया और कुछ घंटे साथ में बिताए। जब जिम जाने वाला था तो जेरी पीछे से चिल्लाकर बोला, "जिम अगर मैं नहीं मरा तो याद रखना यह माफी मानी नहीं जाएगी।" द्वेष भाव रखने के लिए जीवन बहुत कम है। द्वेष रखना व्यर्थ है।

लानत है मुझ पर

जहाँ एक तरफ द्वेष रखना अच्छी बात नहीं, वहीं बार-बार चोट खाना भी अच्छी बात नहीं। किसीने ठीक ही कहा है, "तुम मुझे एक बार धोखा देते हो तो तुम पर लानत है, तुम मुझे दोबारा धोखा देते हो तो मुझ पर लानत है।" जॉन केनेडी ने एक बार कहा था, किसी को माफ कर दो लेकिन उसका नाम मत भूलो। उनका मतलब यह था कि किसीसे बार-बार धोखा खाना समझदारी नहीं है।

त्रिवेन्द्रम-केरेला। राज्य की नई गवर्नर शीला दीक्षित का सम्मान करने एवं ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के बाद ब्र.कु.पंकज, ब्र.कु.मिन्नी एवं ब्र.कु.डॉ.शंकर।

मुम्बई। अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल कॉन्फ्रेन्स में डॉ. मेहेर मास्टर मूस,चेयरमैन व डॉ. कनोरिया द्वारा डॉ. रमेश, डॉ. शोभना तथा ब्र.कु. गीतांजली,ग्लोबल हॉस्पिटल को स्पेशल अवार्ड तथा गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया।

दिल्ली-लाजपत नगर। शिव अवतरण मेले के उद्घाटन अवसर पर कैडल लाइटिंग करते हुए मुल्ला शाम शतिबेज दारुलूम देवबन्द, डॉ. ज़ेड.ए.राज, विधानसभा स्पीकर एम.एस.धीर, बीजेन्द्र नंदन दास,डायरेक्टर एस्कॉन, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. सुंदरी, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. चन्द्र तथा ब्र.कु. जया।

किच्छा-बरेली। विधायक राजेश शुक्ला को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरोज।

विजयवाड़ा। 'विश्व शान्ति भवन' के उद्घाटन अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु.संतोष,महाराष्ट्र एवं आन्ध्र प्रदेश ज़ोनल इंचार्ज, ब्र.कु.शान्ता एवं ब्र.कु.सविता।